

निवेदन यह है कि हम सब लोगों ने बजट को सुना, उसमें वेंचर कैपिटल जरूर है, मगर जब यह वेंचर कैपिटल पैसा देना चाहता है, तो 25 करोड़ के नीचे कोई पैसा नहीं देता है। ये अपने मित्र अरुण जेटली जी से मिल कर इसके अंतर्गत कुछ ऐसा प्रावधान करवा दें, जिसमें उनके लिए कुछ बाध्यता हो, जैसे 20 परसेंट वाली बात है कि 20 परसेंट आपको एम.एस.एम.ई. से खरीदना होगा। इस तरह का प्रावधान हो कि कम से कम पांच परसेंट कैपिटल उनको देना होगा। सर, इन्हीं शब्दों के साथ मैं उनको धन्यवाद देना चाहता हूँ कि उन्होंने इस पर बहुत बढ़िया जवाब दिया, and I withdraw the Bill. Thank you.

The Bill was, by leave, withdrawn

The Compulsory Military Training Bill, 2012

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SATYANARAYAN JATIYA): Now, we shall take up the Compulsory Military Training Bill, 2012. Shri Avinash Rai Khanna.

श्री अविनाश राय खन्ना (पंजाब) : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूँ:

कि देश के सभी युवाओं को अनिवार्य सैन्य प्रशिक्षण देने तथा मैट्रिकुलेशन से स्नातक स्तर तक के बच्चों के लिए पाठ्यक्रम में सैन्य प्रशिक्षण को शामिल करने तथा तत्संसक्त विषयों का उपबंध करने वाले विधेयक पर विचार किया जाए।

महोदय, दो साल बाद आज यह महत्वपूर्ण बिल चर्चा के लिए सदन में आया है। मैं यह बिल जिस कारण से लाया हूँ, उसकी पृष्ठभूमि और भूमिका इस सदन के सामने रखना चाहता हूँ। वैसे तो देश का हर हिस्सा, हर गांव महत्वपूर्ण होता है, लेकिन इंटरनेशनली जो बॉर्डर स्टेट्स होते हैं, वे देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। पंजाब से आता हूँ। आज पंजाब का नौजवान नशे में इतना डूब चुका है कि पहले जो बहुत बढ़िया किसान, एक मेहनती ऑफिसर या आर्मी का जवान मिलता था, वह शायद आज हमें मिलना बंद हो गया है। दूसरी जो बात मेरे मन में थी, वह यह है कि अगर इस देश में अनुशासन नहीं है, तो देश नहीं चल सकता है, क्योंकि मानव शरीर भी बिना अनुशासन के नहीं चल सकता है, एक दफ्तर भी बिना अनुशासन के नहीं चल सकता है, इसी तरह कोई भी देश बिना अनुशासन के नहीं चल सकता है, लेकिन वह अनुशासन हम कहाँ से लाएं? आज परिवारों का सिस्टम ऐसा हो गया है कि मां-बाप के पास अपने बच्चों के लिए समय नहीं है और टीचर्स के ऊपर इतना बर्दन है कि वह अपना सिलेबस पूरा करने के लिए ज्यादा समय पढ़ाई में देते हैं। जब खेलों के लिए बच्चों के पास समय नहीं है, तो देश का बच्चा, देश का नागरिक अनुशासित कैसे होगा? जब हम इस देश के हालात देखते हैं तो पाते हैं कि कहीं नक्सलवाद है, कहीं आतंकवाद है और कहीं इस देश को अलग करने की भावना पैदा हो रही है। इसका मूल कारण यह है कि इस देश में देशभक्ति की भावना कम हो रही है।

महोदय, जब मैं इस बिल की तैयारी कर रहा था तो मुझे यह पता चला कि जब चाइना से हमारी लड़ाई हुई तो उस समय दिल्ली में जिन लोगों ने ट्रैफिक की सारी व्यवस्था को देखा, वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सदस्य थे। उन्होंने दिल्ली की सारी व्यवस्था को देखा और उसके बाद

[श्री अविनाश राय खन्ना]

उन्होंने सैनिकों को भोजन पहुंचाने का भी काम किया। अगर हम उसके पीछे जाएं, तो सन 1948 में जब पाकिस्तान ने हम पर हमला किया था तो उस समय उसने जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर एयरपोर्ट को पूरी तरह से डैमेज कर दिया था। उस डैमेज्ड एयर-स्ट्रिप को ठीक करने के लिए भी हमारी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों ने काम किया। जब कारगिल का युद्ध हुआ तो मुझे वहां जाने का मौका मिला और मुझे द्रास में भी जाने का मौका मिला। जब वहां मैंने लोगों से बातचीत की तो पता चला कि आर्मी के साथ-साथ वहां के लोकल लोगों ने भी, चाहे वे घोड़े वाले थे या खच्चर वाले थे, उन्होंने उस युद्ध में हमारा बहुत साथ दिया। वहां के पहाड़ इतने बड़े हैं कि बिना ट्रेनिंग के उन पर चढ़ना बड़ा मुश्किल था, लेकिन चूंकि वे लोकल लोग वहां आते-जाते थे, इसलिए आर्मी के लिए आर्म्स और रसद ले जाने में उन्होंने हमारा बड़ा साथ दिया। अगर हम इन घटनाओं को देखते हैं तो हमें यह पता चलता है कि अगर इस देश के बच्चों को अनुशासित करने के लिए उन्हें दसवीं कक्षा से लेकर किसी एक तय एज तक ट्रेनिंग दी जाए तो अच्छे ह्यूमन रिसोर्सिज खड़े हो सकते हैं। मैं समझता हूं कि पॉपुलेशन के हिसाब से दुनिया में दूसरे नम्बर पर भारत में सबसे ज्यादा ह्यूमन रिसोर्सिज हैं और हम इन्हें अच्छे ढंग से यूज कर सकते हैं। यहां हम बार-बार आबादी कम करने की बात कहते हैं। वह कम होगी या नहीं होगी, यह पता नहीं है, लेकिन अगर इतनी आबादी है तो उसको हम ट्रेड करके यूज कर सकते हैं। जब एक बच्चा इंजीनियरिंग करके मिलिट्री ट्रेनिंग लेने जाएगा तो उसके रूप में आर्मी, बी.एस.एफ. तथा अन्य फोर्सिज के लिए एक ट्रेड इंजीनियर मिल सकता है। इसी तरह, जब एक डॉक्टर ट्रेनिंग के लिए जाएगा तो उन फोर्सिज के लिए एक डॉक्टर मिल सकता है। अगर वह वहां सेवा नहीं करना चाहता है और सिविल लाइन में आता है तब भी वह ट्रेनिंग उसके दिमाग में रहेगी और यहां आकर वह एक अच्छे अनुशासित नागरिक के रूप में देश की सेवा कर सकता है।

यह हो सकता है कि माननीय मंत्री जी एन.सी.सी. का जिक्र करें, लेकिन आज एन.सी.सी. का ट्रेड भी कम हुआ है। बहुत से स्कूलों के साथ-साथ प्राइवेट स्कूल्स, जिनका एजुकेशन के ऊपर आज काफी हद तक कब्जा है, वहां भी एन.सी.सी. का प्रचालन बन्द हो गया है। आज अगर कोई एक्सिडेंट होता है तो उसका केस रजिस्टर होता है। उसमें सजा होती है और उसमें मैक्सिमम सजा दो साल की होती है, लेकिन आज अनुशासित न होने के कारण पहले तो एक्सिडेंट में जो व्यक्ति मरा है, उसकी लाश सड़क किनारे रख दी जाती है, फिर वहां पर लोगों का तब तक धरना चलता है जब तक कोई पुलिस ऑफिसर आकर यह आश्वासन न दे दे कि हमने दोषी को गिरफ्तार कर लिया है। बात यहीं खत्म नहीं होती, जिस ट्रक या गाड़ी से वह एक्सिडेंट होता है, उसको लोग जला देते हैं। वे सिर्फ उसी को नहीं जलाते, बल्कि अगर उन्हें मौका मिलता है तो इर्दगिर्द के जितने भी एस्टैब्लिशमेंट्स होते हैं या जो भी वाहन वहां से गुजरते हैं, उनको डैमेज करना एक आम बात हो गई है। उसका एक कारण यह है कि लोगों में एक निराशा है और उसका दूसरा कारण यह है कि हम यह समझ नहीं पा रहे हैं कि हम जिन प्रॉपर्टीज का नुकसान कर रहे हैं, वे हमारे देश की प्रॉपर्टीज हैं और इनमें हमारा भी हिस्सा है। सर, मैं इस बिल के माध्यम से यह कहना चाहता हूं कि इससे एक ऐसा अनुशासित नौजवान इस देश को मिलेगा जो किसी भी समस्या का मुकाबला करने के लिए तैयार होगा।

सर, आजकल कई छोटी-छोटी घटनाएं हो रही हैं। यहां पर बहुत बार यह चर्चा हुई है कि महिलाओं और लड़कियों के साथ बहुत दुर्व्यवहार हो रहा है। मैंने देखा कि टी.वी. वालों ने सिम्पल यह दिखाने की कोशिश की तथा प्लांट किया कि एक गाड़ी से एक लड़की की आवाज आ रही है। लोग आते हैं, उसके पास खड़े होते हैं और चले जाते हैं। मोटरसाइकिल वाला आता है, वहां खड़ा होता है और चला जाता है। वहां किसी की हिम्मत नहीं पड़ी कि उस गाड़ी को रोककर, देखकर यह कह सके कि इसमें क्या हो रहा है? यह एक दर्शन है देश का देश के साइकोलॉजिस्ट्स बताते हैं कि आज का नौजवान शायद वह हिम्मत हार चुका है कि अगर मैंने मदद करने की कोशिश की, अगर मैंने कुछ यहां कहने की कोशिश की तो शायद उसके ऊपर ही केस हो जाएगा। अगर सारी बातों को हम देखें तो उससे एक ही बात निकलती है कि हमें अपने देश के नौजवान को अनुशासित करना होगा। इसमें एक और भी फायदा है। जब हम कम्पलसरी मिलिट्री ट्रेनिंग देंगे, तो उसमें मेडिकल चैकअप होगा, तो हमारे पास एक डेटा होगा कि मेरे देश का नौजवान आज कितना हैल्दी है, वह कितना बीमार है इस बात का डेटा भी हमारे देश के सामने आ जाएगा और उसके साथ अपना जो हैल्थ का बजट है, हैल्थ की जो स्कीम्स हैं, उनको भी हम सही करने की दिशा में बढ़ सकते हैं। सर, मैंने 170 देशों की स्टडी की है कि कहां-कहां किस देश में यह ट्रेनिंग कम्पलसरी है, किस देश में voluntary है, किस देश में कम्पलसरी और voluntary है, किस देश में सेलेक्टिव है और किस देश में सिर्फ रजिस्ट्रेशन करवाने की जरूरत है। अगर इन सब देशों के इस सिस्टम को स्टडी किया जाए तो मैं समझ सकता हूं कि एक बहुत सटीक, एक बहुत बढ़िया अनुशासित, एक बहुत बढ़िया कानून हमारे पास होगा जिसके कारण हम अपने देश के नौजवान को अनुशासित करके देश के काम में लगा सकते हैं। सर, आज मैं समझता हूं कि जब भी कोई सुबह उठता है यहां सबसे पहली गाली वह अपने देश को देता है कि हम कहां पैदा हो गए। क्यों? क्योंकि पहली बात कि उसके मन में देशभक्ति की भाव खत्म हो चुका है। दूसरी बात, जब वह अपनी सारी समस्याओं को देखता है कि बेराजगारी है तथा जब किसी ऑफिस में जाते हैं तो वहां पर ढंग से बात नहीं होती, किसी को मिलने जाते हैं काम के लिए जाते हैं, तो वह काम नहीं करता। कितना फ्रस्टेशन उसके मन में भरा है। तो वह इस सिस्टम को गालियां देने की कोशिश करता है। उसको निकालने का भी एक माध्यम है कि अगर आज पूरी तैयारी करके एक अनुशासित नौजवान हमारे देश को मिलेगा, तो मैं समझता हूं कि पॉपुलेशन का जो हम बर्दन सोच रहे हैं, अगर यही पॉपुलेशन एक अनुशासित पॉपुलेशन होगी, यही पॉपुलेशन एक देशभक्त पॉपुलेशन होगी, यही पॉपुलेशन देश के लिए काम करने वाली पॉपुलेशन होगी तो यह समस्या नहीं, यह हमारे लिए एक सोर्स होगा। इसको हम देश के भिन्न-भिन्न कार्यों में यूज कर सकते हैं। एक एक्जाम्पल के तौर पर मिलिट्री ट्रेनिंग में यह नहीं कि सिर्फ गोली चलाया जाना सिखाया जाता है, उसके बहुत से पाटर्स हैं। मैं खुद एन.सी.सी. का कैडेट रहा हूं, मैं खिलाड़ी भी रहा हूं। मैं समझ सकता हूं कि जब ऐसी ट्रेनिंग इंसान लेता है तो उसके मन में जो भावनाएं पैदा होती हैं, जो काम करने की क्षमता पैदा होती है वह क्षमता उसको देश की तरक्की, उन्नति के लिए काम आएगी। सर, मैं आपको एक उदाहरण देना चाहता हूं कि जब मैं लोक सभा का मेंबर ऑफ पार्लियामेंट था, तो मेरे मन में एक बात आई कि क्यों न अपनी कांस्टीट्यूएंसी में स्पेशल आर्मी रिक्रूटमेंट के लिए मांग की जाए। मैंने मांग की और वह रिक्रूटमेंट

[श्री अविनाश राय खन्ना]

मुझे मिल गई। रिक्रूटमेंट मिल गई तो वेस्ट बंगाल के ऑफिसर उस रिक्रूटमेंट के लिए गए। वह अपने ऑफिसर को कह कर गए कि मुझे पंजाब में जाकर बड़ी मुश्किल होगी कि वहां सभी लोग इतने हट्टे-कट्टे होंगे, इतने हैल्दी होंगे कि मैं फिजिकल में उनको कैसे सलेक्ट कर पाऊंगा, उनकी मेरिट कैसे बना पाऊंगा, मेरे लिए यह बहुत मुश्किल होगा। कुदरती मैं वहां नहीं जा पाया, लेकिन बीस हजार लोग उस रिक्रूटमेंट में गए थे। तो बीस हजार में से सिर्फ दो हजार लोग ही फिजिकली फिट हुए। जब ऑफिसर यहां आया, उससे बात हुई तो उन्होंने बताया कि मैं जैसा पंजाब के बारे में सोचता था आज मुझे वहां जाकर पता चला कि न मुझे उनकी हाइट के लोग मिले, न उनकी चेस्ट उतनी थी, न वे दौड़ पाए। तो इसका कारण क्या था? कारण वही था कि जो वहां पर लत नशों की है, उसके कारण हमारे नौजवान बहुत कमजोर हो चुका है। हमारी पंजाब सरकार बहुत कुछ रही है, केन्द्रीय सरकार ने भी अभी 50 करोड़ रुपए का बजट डी-एडिक्शन के लिए रखा है। ठीक है, कि बहुत बड़ा नेक्सस है, यह इंटरनेशनल साजिश है ड्रग की। सर, अगर हम दुनिया के तीन बड़े बिजनेसेज गिनें तो पहला नंबर आर्म्स बिजनेस और तीसरे नंबर पर ड्रग्स का बिजनेस आता है। हालांकि यह एक illegal business है, लेकिन यह बिजनेस बहुत ज्यादा flourish हो रहा है और इसका कारण यह है कि आज का नौजवान उस तरफ जा रहा है। इस बारे में एक्सपर्ट्स ने स्टडीज की हैं और उन सबने एक राय से कहा है कि नशे की मार से पंजाब और देश तभी बच सकता है, जब हमारा नौजवान उसके nexus से निकल जाए और इस nexus से निकलने का सिर्फ एक ही रास्ता है कि हम अपने नौजवानों को मिलिटरी ट्रेनिंग के लिए तैयार करें। सर, जब वह एक साल मिलिटरी ट्रेनिंग करेगा, तो अपने आप उस nexus से निकल जाएगा और मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि हमारा देश खास तौर से पंजाब जो नशे की गंभीर समस्या से जूझ रहा है, उससे वह निकल जाएगा।

सर, हो सकता है कि financial aspect इस काम में आड़े आए क्योंकि लोक सभा में उठाए गए प्रश्नों के सिलसिले में, मैंने अपनी सरकार और पिछली सरकार को जवाबों में देखा है कि उसमें बहुत से reasons दिए गए हैं। उनमें यह भी कहा गया है कि हम इस ट्रेनिंग को कम्पलसरी नहीं कर सकते। मेरा कहना है कि अगर इसे हम कम्पलसरी नहीं कर सकते तो माननीय मंत्री जी एक ऐसा रास्ता निकालें ताकि एक नौजवान को कम-से-कम एक साल की ऐसी ट्रेनिंग करने का मौका मिले और वह अपने देश और प्रदेश की सेवा कर सके।

सर किसी भी देश का नाम दो बातों से आगे बढ़ता है। एक Research and development और दूसरा स्पोर्ट्स और जब हम स्पोर्ट्स की तरफ देखते हैं, तब हमें उस तरह के सेहतमंद खिलाड़ी नहीं मिल पाते। जब हम रिसर्च एंड डेवलपमेंट की तरफ देखते हैं, तो पाते हैं कि हमारे पास Budget allocations इतने नहीं हैं कि हम रिसर्च एंड डेवलपमेंट का काम ज्यादा कर पाएं। इसलिए अगर हम स्पोर्ट्स में अपने देश का नाम आगे ले जाना चाहते हैं, देश के लोगों को हैल्दी बनाना चाहते हैं, अगर अपने देश के लोगों को disciplined बनाना चाहते हैं, अगर हम चाहते हैं कि देश में होने वाले agitations से देश का नुकसान न हो, तो उसका एक ही रास्ता है कि हम अपने नौजवान के मन को बदलें। सर, दुनिया के देशों में जहां-जहां भी compulsory military training है, voluntary military training है, फिर चाहे वह selective है या रजिस्ट्रेशन से भी है,

वहां लोग आगे आते हैं कि जब भी जरूरत पड़े, हम अपने देश की सेवा के लिए तैयार हैं, इसलिए आज जो एक नेगेटिव वातावरण देश में बना हुआ है, उसकी जगह देश में देशभक्ति की भावना फिर से पैदा हो सके, मैं माननीय मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि इस बिल को स्वीकार कर देश को एक नई नीति प्रदान करें। इससे देश के नौजवानों को बड़ा लाभ होगा। मैं इतनी बात कहकर अपना भाषण समाप्त करता हूँ। बहुत-बहुत धन्यवाद।

The question was proposed.

उपसभाध्यक्ष (डा. सत्यनारायण जटिया) : डा. नाच्चीयप्पन।

DR. E.M. SUDARSANA NATCHIAPPAN: Sir, the pith and substance of this particular Bill has already been evolved by the Government for the past 60 years, and more specifically, it was done when we faced the war with Pakistan and during the Chinese invasion. We started giving training to the youths on two aspects. One, we wanted to see that patriotism should be developed from young age and the people should be ready to voluntarily come forward and put their mind, body and the intelligence for protection of India. We have also succeeded in that attempt by introducing the National Cadet Corps at the college and high school levels. Then, we experimented with the Sainik School method, whereby the students, who joined these schools, got all the fundamental training which made them eligible for becoming Commissioned Officers, whether in Army, Air Force or in Navy. This has succeeded very well and helped many of the youths who had the ambition of serving the country by way of uniformed service in any of the three Wings of our Forces.

Subsequently, when we started the debate on making it compulsory or making it somewhat nearer to compulsory, it was not found appreciable by certain sections. Then, we made it as a voluntary service. Sir, you know very well that in American system, a compulsory military training is given to everybody. But after the Second World War, it has gradually waned away and even though, many of the politicians, Presidents of the United States of America have come after having a full training, serving for the three Forces, they used to think about how patriotic they were, how committed they were for the United States of America.

The culture of USA is divided. They were having a continuous process of saying, "We the people of the United States of America". In India, when we go for catching the vote, we never say, you vote for India. But in America they used to ask for the same for the United States of America. Therefore, they have to, again and again, remind the people who were having origin in Europe and other Asian countries, and, who lived there by their own meritorious services. Having separate federal set-up, they want to remind the people that they are not a separate country; they have got the United States of America.

[Dr. E.M. Sudarsana Natchiappan]

India is somewhat similar to that. We are also united. Even though we have got different ethnic, linguistic, cultural groups in geographically different areas, we never become united by way of any religion or any unified country. We are also a country of united States; we are a union of States, which becomes 'Bharat' or 'India'. Therefore, we are very careful in handling the issues. Learning of Hindi was also one of the targets for making the military, Air Force, and Navy training at the-college level. I remember, and, I can proudly say that I could pass through the examination in the Naval services. As a graduate in Science during my college period, I was Cadet Captain, which has its equivalent in the Army, which was the highest post in college life. I was motivated that I should join the medical services of Navy. Finally, I ended up being a law student. Our hon. Law Minister is here. Only as last resort, we used to go to the law college. But now it has become a fashion to go to the law college.

THE MINISTER OF COMMUNICATIONS AND INFORMATION TECHNOLOGY; AND THE MINISTER OF LAW AND JUSTICE (SHRI RAVI SHANKAR PRASAD): May I interrupt, Mr. Vice-Chairman, Sir? Had he pursued his career in the Navy, the Parliament would have been a loser? Isn't it, Mr. Natchiappan?

उपसभाध्यक्ष (डा. सत्यनारायण जटिया) : इनका एक्सपीरियंस जरूर काम आएगा।

DR. E.M. SUDARSANA NATCHIAPPAN: Therefore, we are very proud of having got the training in the youth period. And, only due to this, wherever there is a small attack on nationalism, or, whenever there is anything against the State, against the nation, we cannot tolerate the same. So, training is very much necessary for India. We are in a globalized economy where there are no boundaries. There is nothing that we can claim ourselves that it belongs to a particular country. The world is now open. But we cannot live long in that universal way of global economy and other things. Everybody is having his own nationality, own language, own ethnic mentality and everything. So, I appreciate the attempt made by our friend, Avinash Rai Khanna *ji*, for bringing this particular Bill, on which we could express our views.

I feel that we have graduated from the National Cadet Corps to the National Student Services (NSS) and various types of trainings are given at the college level. But, now, the training is not physical training alone. Once, people used to feel that in the military, or, say, Air Force service, you have to go in for a drill, you have to fast for so many days, you have to do hard work, you have to go for mountaineering, you have to go for boat-sailing. These types of things were thought about. But the military and the uniform services are now based on scientific method.

I think, there will not be any soldier in due course; after a decade, we may not have any soldier. We may be having a system of surveillance whereby the higher level officers will be looking at the monitors to find out as to where the movement is taking place, and, then, they will carry out attacks from certain locations. Therefore, the human resources are not going to be tortured like that as in the conventional way of military services, the Air Force or the Navy. We are gradually going to the scientific method of protecting our country. We are gradually going to the level of understanding each and every aspect in scientific way, rather than the conventional methods. But, at the same time, as we have brought up in the culture that our body should be fit for anything, any consequences, facing any opposition by way of physical battle-like situation, similarly our mind should also be very stable to look at the issues, whenever there is a battle or war situation comes up. Similarly, we should have the intelligence to use it. We are the people who accept the sovereignty. We are born with a divine power to protect not only our homes, not only our families, not only our town, but we have to protect our soil, the mother soil, which has brought us to this level. Many of the pictures which were coming during 1965 inculcated a lot of patriotism throughout India Lal Bahadur Shastriji's slogan of the *Jai Jawan Jai Kisan* and the military people was also very much appreciated at that time. Nowadays, we are deviating ourselves from this type of national aptitude or national commitment or national patriotism. These are all becoming the backburner of the Indian society. It is a right time I feel that we have to make a parallel level of education, even from the level of the primary school and high school, to have the skill of Military, Armed Force and Navy so that the people who have got the aptitude to come and join the Military schools or Air Force schools or Navy schools or colleges at the later level, they should get the opportunity of making it. Our hon. Prime Minister, Dr. Manmohan Singh, when he was heading the UPA, even took the initiative that at the high school level, there should be Indian Administrative Services training so that the people who are ready to come forward, who have the aptitude to become the administrators of public services, should have the opportunity to learn things. Therefore, the opportunity of learning the things at the lowest level, the accessibility to have the knowledge at the lowest level is very, very important. The present system of education is gradually going only for occupation or for job-oriented education. We have to mix it along with patriotism; we have to mix it along with the feeling that I am an Indian; I have to come forward, committing myself to save the country, not only its territorial integrity, not only saving it from the enemies but also showing my merit, showing my commitment, showing my innovation, showing my research mind, I want to show that Indians are the best people in the world. We are proud that for the last 65 years, our brain drain is one of the sources of the western countries, more specifically the Americans. They have grown only with our own trained people who

[Dr. E.M. Sudarsana Natchiappan]

have gone to America seeking jobs and become citizens after getting the Green Card. Now, the view is turning around. Indians are coming back to India from America to show their merit. Therefore, this is the correct opportunity to create a thinking why not we go for better training at the high school level, just like the NCC and other things. I was in the Defence Committee. At that time, I could get the opportunity of calling the National Cadet Corps Director General as witness. At that time, we could find that the Government had started to stop funding for training. If I have a private school and I want to have an NCC training, but what they say is, you have to pay for that. I hope the Government should come forward to allow the payment to be made by the Government itself to have the NCC training at the high school. Whether it is a public school or a private school, whoever is volunteering to have the training, the Government of India, from the Defence Ministry, should pay for that and ask them to have the training. Not only physically but also mentally and technically, they should be graduated to that level. I am very much recollecting myself of how I could sail in the Arabian Sea in a military ship when I was NCC Captain. I had the feeling that I was sailing in our own naval ship to protect our seas. If we inculcate this feeling in our children in early part of their life, it will remain with them throughout their life. It will give them a feeling that they are Indians. They will be proud of it. They want to learn Hindi. They want to protect the integrity of nation. These types of opportunities should be given to the Indian children.

We are having a feeling that we are divided in certain ways. They may be linguistic or ethnic or geographical divisions. But we should not consider them as divisions. It is the strength of India. Different societies are uniting India. Diversity is not a barrier for us. Diversity is our strength. We can show our Indianess, our culture to the world. We are going to succeed in every venture.

I want Mr. Avinash Rai Khanna's wish to be fulfilled. The Government of India should spend more money to provide military training to the youth at the level of school and college. Thank you very much, Sir.

श्री बसावाराज पाटिल (कर्णाटक) : उपसभाध्यक्ष महोदय, आदरणीय अविनाश राय खन्ना जी ने सभी युवाओं को सेना में कम से कम एक साल की अनिवार्य ट्रेनिंग देने का बिल लाकर एक बहुत महत्वपूर्ण विषय की ओर सारे समाज और देश का ध्यान आकर्षित करते की कोशिश की है। उसके साथ-साथ उन्होंने पंजाब का वर्णन किया। आज जिस स्थिति में वह अधिक सम्पन्नता के कारण पहुंच गया है, उसको फिर से वापस लाने के लिए उनके मन में यह वेदना पनपी है। इन सब चीजों को देखते हुए दुनिया में एक अच्छे देश का विकास होना चाहिए। जैसे हम इजराइल को देखते हैं। वहां देशभक्ति है, वहां पर अपनी भाषा के प्रति श्रद्धा है, अपनी संस्कृति के प्रति

श्रद्धा है। इसके कारण वह अपनी अस्मिता को बनाए रखने में सफल हुआ है। इसका मूल कारण यह है कि आज भी वहां पर मैट्रिक के बाद एक साल की compulsory सैन्य शिक्षा हर विद्यार्थी को दी जाती है। इसके कारण उस देश ने दुनिया में अपनी साख बनायी है। चाहे वह नोबेल पुरस्कार हो, एक प्रकार से सारी दुनिया का जो आधुनिक तंत्र है, परोक्ष रूप से उसे अमेरिका के माध्यम से अगर कोई कंट्रोल करता है, तो वह इज़राइल का नागरिक है। इस कारण से मैं यह चाहता हूं कि यह जो बिल लाया गया है, यह इस देश के हित में अत्यंत आवश्यक है। वैसे तो यह ट्रेनिंग अनेक डिपार्टमेंट्स से जुड़ी हुई है। शिक्षा क्षेत्र में इसके द्वारा इम्प्लीमेंटेशन होता है। सर, एक कहावत है कि जब आग लग जाती है, तब कुआं खोदने जाते हैं। वैसे ही 1962 से पहले, चाइना के एग्ग्रेसिवेशन के समय में एन.सी.सी. थी। अगर मैं सच कहूं तो देश की जनसंख्या जब 60-70 करोड़ थी, उस समय एन.सी.सी. की जो संख्या थी, आज भी स्कूलों और कॉलेजों में उतनी ही लिमिट बनाकर रखी हुई है। हमारे स्कूलों से हम सौ बार मांग करते हैं कि हमें एन.सी.सी. दीजिए। वे कहते हैं कि यह लिमिटेड है, अगर कहीं एन.सी.सी. का ऑफिस बंद हो जाएगा, तब आपके स्कूल को मिल जाएगा। जिस तरह से देश की जनसंख्या बढ़ी है, उस हिसाब से कम से कम दोगुनी-तिगुनी एन.सी.सी. हाई स्कूलों में, जूनियर कॉलेजों में सरकार को खोलनी चाहिए। अगर आप उसे नहीं खोलेंगे तो सेना के लिए आगे आने वाले समय में अच्छे लोग मिलने बंद हो जाएंगे। आज हम जानते हैं कि सरकार सेना के अत्यंत महत्वपूर्ण आठ हजार ओहदों पर लोगों की नियुक्ति करना चाहती है, लेकिन उसे लोग नहीं मिल रहे हैं क्योंकि इसका बेस, जो हाई स्कूल से प्रारम्भ होता है, उसकी तरफ सरकार ने ध्यान नहीं दिया है। जो बीत गया, उसे याद करने से कुछ फायदा नहीं होगा। शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा - सबको एक discipline में लाना इस देश के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। इस आवश्यकता को पूर्ण करने की दृष्टि से सेना की यह ट्रेनिंग अत्यंत आवश्यक है। इसे लाने के लिए मैं इस बिल का पूर्ण समर्थन करता हूं। साथ ही साथ सरकार, हाई स्कूल, जूनियर कॉलेज, डिग्री कॉलेज, इन माध्यमों में - हो सकता सरकार हां कह दे और अविनाश राय खन्ना जी अपने बिल को वापस लें - लेकिन जो एन.सी.सी. का कोर्स है, सरकार को हर सतर पर इसे तीन या चार गुना तक बढ़ाने का काम करना चाहिए।

[उपसभाध्यक्ष (डा. ई.एम. सुदर्शन नाच्चीयप्पन) पीठासीन हुए]

इस देश में आने वाले समय में अच्छे सैनिक मिलेंगे। इतना ही नहीं, उन सब विद्यालयों और कॉलेजों में एक नया discipline का रास्ता शुरू होगा। फिर वह आदमी किसी भी क्षेत्र में जाएगा, तो वह एक disciplined नागरिकता के नाते जियेगा, नहीं तो वहां भी बिकेगा, और जगह भी बिकेगा, तथा देश की अस्मिता संकट में आएगी। देश की अस्मिता को बचाने की दृष्टि से, मैं माननीय मंत्री जी से यह कहना चाहता हूं कि इस देश के हित में फिर एक बार, again and again मैं आग्रह करता हूं कि प्राथमिक स्तर पर, हाई स्कूल, जूनियर कालेज, डिग्री कालेज में एन.सी.सी. को तुरंत तीन या चार गुना की संख्या में बढ़ाया जाए। यह भविष्य के भारत के लिए अच्छा रहेगा। अगर इस बिल को सरकार स्वीकार करेगी, तो मैं यह कहूंगा कि “यह सोने पर सुहागा” होगा। इस दिशा में सरकार पहल करे और मैं श्री अविनाश राय खन्ना जी के इस प्राइवेट मेम्बर्स बिल का हृदय से समर्थन करता हूं।

SHRIMATI VIJILA SATHYANANTH: Mr. Vice-Chairman, Sir, I thank you for motivating me to share my views on the Private Member's Bill and I thank you for this wonderful opportunity.

As rightly pointed out by the Vice-Chairman, I want to follow what he said. The first and foremost and the vital point of having military training for the youth of our country is to bring them out of their vulnerability, to convert their vulnerability, to make the youth throw their vulnerability and come out as modest and law-abiding citizens. So, the youth has to be transformed. The youth has more potential. The youth must have more civic responsibility. They have to become more law-abiding citizens. So, that is the main point we wanted to put forward along with the Bill introduced by the hon. Member.

As you rightly said, I had a golden opportunity to serve in the National Cadet Corps for seven years - four years in my High school, from 7th standard to 10th standard, and then, three years in my under-graduation in the college. I come from Tirunelveli in the Southern part of India. I did not have an opportunity or exposure such as yours like gliding and Navy exposure. We had only the Army wing in our NCC. Even then, I had the greatest training. I went for trekking expedition in Shivaji Fort in Pune and I went for the basic nursing hostel training in the Wellington camps in Ooty. And I also got the greatest opportunity of participating in the RD camps. I wanted to be very broad. You did not mention about women empowerment. The main thing is empowerment. I am here today because of the seven years' training I had in my school and college days. I am standing here. It is empowerment, empowering women and learning more martial skills. We have learnt to be one. We shall be one. We want all of us to be one in this country. We have learnt to be tolerant towards all religions, all castes, all creeds and all languages. We have learnt to be tolerant because we moved with Punjabi girls, we moved with people from Eastern States and we moved with all of them in my early youth, and childhood. That came at the stage of my matriculation. So, it is the greatest opportunity, especially to protect them. Now, the women and especially the girl children, who go out of their homes to schools and colleges, don't have protection. But once they are equipped with martial arts, karate and kungfu in their school and college days, they will be able to face all the challenges with courage. I want girls right from their high school level to get military training to become more courageous. I have handled .22 rifles. I have participated in the State level rifle competition which has given me more exposure as to how I can face everything with grit, with great courage.

I know that this Bill suggests that students have to undergo military training right from our school level to the college level. We have to inculcate strong patriotism

which has been brought out by the military training. The diversion of such enormous youth force from contributing to the overall economic growth of our country would be counterproductive for this nation as a whole. So, I want this enormous youth to be well trained, more civic responsible, to be more law abiding, to be more forceful and to face every thing for a greater nation.

I thank you for the opportunity given to me for expressing my views on this Bill. I support this Bill that military training should be made compulsory for the protection of the girls and women, and to face this male-dominated society with courage and determination. Thank you.

डा. सत्यनारायण जटिया (मध्य प्रदेश) : वाइस चैयरमैन सर, जिस बात की जरूरत देश को है, वह यह है कि हर राष्ट्र का निर्माण करने के लिए पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है। बिना प्रशिक्षण के मनुष्य का निर्माण नहीं होता है। इस संसार में सदियों से और आज भी अस्तित्व के संघर्ष के लिए स्वयं को तैयार करना होता है। यदि हम व्यक्ति के बारे में विचार करें तो व्यक्ति का निर्माण करने के लिए यदि प्रारंभ से ही उसका शिक्षण-प्रशिक्षण ठीक हो जाए, प्रारंभ अच्छा हो जाए तो निश्चित रूप से आगे परिणाम तक जाने के लिए, निर्माण तक जाने के लिए हम ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण कर सकते हैं। जितने भी महापुरुष हुए हैं, यदि हम उन सबके बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे तो यह लगेगा कि कहीं-कहीं उनको यह संस्कार मिला है। मिलिट्री का प्रशिक्षण होना एक संस्कार है। मेरा सौभाग्य रहा है कि मुझे ऐसे प्रशिक्षण वाले सैन्य स्कूल में पढ़ने का अवसर मिला है। प्रारंभ से ही इस विधा में जाने के कारण मेरा जो स्टेमिना है, कार्यक्षमता है, वह धीरे-धीरे बढ़ती गई। मैं अपने अभ्यास के लिए, 3 हजार मीटर, 5 हजार मीटर तक दौड़ने के लिए जो तैयारी करता था, वह 10 किलोमीटर, पन्द्रह किलोमीटर और सप्ताह में एक बार बीस किलोमीटर तक दौड़ने में लगाता था। लेकिन यह अकस्मात् नहीं हुआ। चूंकि जहां मैं पढ़ता था, वहां पर सी.आर.पी. हुआ करती थी। सी.आर.पी. के मैदान पर उनके साथ दौड़ करके मुझमें क्षमता अर्जित करने का काम हुआ। सैन्य स्कूल में पढ़े होने के कारण, मुझे भी यह ऊर्जा मिली हुई थी, जिसके कारण से यह सब सम्भव हुआ।

पहले स्कूल के समय में ए.सी.सी. हुआ करती थी, फिर एन.सी.सी. हुआ करती थी, 'नेशनल कैडेट कोर' हुआ करती थी, हर विद्यालय में यह होती थी। आज तब हम शिक्षण के क्षेत्र में काम करते हैं तो हम देखते हैं कि किसी को इस तरफ जाने का मौका ही नहीं मिलता है। एक समय था, जब व्यक्ति वर्दी पहन करके निकलता था। खाकी वर्दी पहन करके, खाकी शर्ट डाल करके, खाकी निकर डाल करके, फिर फीता लगा करके जब वह निकलता था, तब उसको लगता था कि मैं भी इस देश के लिए काम कर सकता हूं। "हर कोई काम पर है, मेरा देश लाम पर है", ऐसा सोच करके हम इस देश के लिए हरेक व्यक्ति को तैयार करने का काम करते थे। यह देश बहुत बड़ा है।

“उत्तरं यत् समुन्द्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्ष तद् भारतं नाम भारती यत्र संस्कृतिः॥”

[डा. सत्यनारायण जटिया]

यहां की संस्कृति ही भारती है। यह निर्माण करने वाली संस्कृति है। निश्चित रूप से यदि इस संस्कृतिक के बारे में हम विचार करने का काम करें, तो इसके अन्दर सारी विधाएं हैं। मैथिली शरण गुप्त जी के शब्दों में कहा जाए, तो हम कहेंगे-

“हम कौन थे, क्या हो गए हैं, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर, ये समस्याएं सभी।
यद्यपि इतिहास अपना ज्ञात पूरा है नहीं।
हम कौन थे, इस ज्ञान का, फिर भी अधूरा है नहीं।
भू-लोक का गौरव प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहां।
फैला मनोहर गिरी हिमालय और गंगाजल जहां।
सम्पूर्ण देशों से अधिक, किस देश का उत्कर्ष है।
उसका कि जो ऋषि-भूमि है, वह कौन, भारतवर्ष है॥”

इसका जवाब देने के लिए हर व्यक्ति का निर्माण होना चाहिए, क्योंकि व्यक्ति से ही समाज की रचना होती है। समाज बनाने के लिए व्यक्ति का निर्माण बहुत जरूरी है। इस सारी रचना में, जैसा हमारे ऋषि कहते हैं, “शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्”। यदि हमारा शरीर अच्छा है, तो फिर विचार भी अच्छा होगा। जब विचार अच्छा होगा, तो निश्चित रूप से आचरण भी अच्छा होगा, इसलिए चरित्र निर्माण करने की दृष्टि से सबसे पहले जो जरूरी बात है, वह यह है कि शरीर को अच्छा होना चाहिए, स्वस्थ होना चाहिए। जब शरीर स्वस्थ होगा, तो स्वस्थ विचार आएंगे। जब स्वस्थ विचार आएंगे, तो आचरण अच्छा होगा। जब व्यक्ति का आचरण अच्छा होगा, तभी समाज का आचरण अच्छा होगा और जब समाज का आचरण अच्छा होगा, तभी देश उन्नति करेगा।

आज ये सारे विकार क्यों आ रहे हैं? किस प्रकार की घटनाएं हमारे देश में घटित हो रही हैं। अभी ड्रग्स के बारे में बात की जा रही थी कि ड्रग्स के कारण लोगों को बहुत परेशानी हो रही है। आज आदमी जीवन का रास्ता ही भटक गया है। व्यक्ति ड्रग्स के रास्ते पर जाता ही क्यों है? आज कितनी घटनाएं घटित हो रही हैं। महिलाओं पर अत्याचार क्यों हो रहा है? अनुज जाति के लोगों पर अत्याचार क्यों हो रहा है? अपना संविधान देने के बाद भी उस संविधान को आचरण में लाने से हम दूर क्यों हो गए हैं? हमारा संविधान बहुत अच्छा बना हुआ है, “हम भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्वसम्पन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय,....”

"We, the people of India, having solemnly resolved to constitute India into a sovereign socialist secular democratic republic and to secure to all its citizens: justice, social, economic and political;..."

ये सब करने के लिए क्या व्यक्ति नहीं चाहिए। इसको कौन करेगा? यदि भारत के संविधान में ये सारी बातें उल्लिखित की गईं, जिसमें हमने कहा है, “न्याय, स्वतंत्रता, समता, बन्धुता, सबको समानता का अधिकार”, यह आएगा कैसे? व्यक्ति के निर्माण की विधा को, अविनाश जी ने जिस तरह रखने का काम किया है, इससे तो राष्ट्र निर्माण का काम करने के लिए एक बहुत बड़ा आधार और सम्बल मिलेगा, राष्ट्र को मजबूत बनाने का सम्बल मिलेगा। इसलिए राष्ट्र के निर्माण की विधा के लिए यह जो ट्रेनिंग का काम है, वह अवश्य होना चाहिए।

इसमें यह कहा गया है कि यह काम स्कूल के अंदर भी होना चाहिए। खेल जो होता है, वह भी एक डिसिप्लिन का काम होता है। जो खिलाड़ी होता है, वह कभी थकता नहीं है। खिलाड़ी कभी हारता नहीं है। हममें से बहुत सारे लोग खिलाड़ी रहे होंगे। जब हम चुनाव के खेल में जाते हैं, तो चुनाव के खेल में भी हार-जीत होती है। जब हार-जीत हो जाती है, तो कुछ लोग तो हार करके बैठ जाते हैं और कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो हार करके भी उसमें से जीत का संदेश ले करके आगे बढ़ जाते हैं। मनुष्य को निर्माण की दृष्टि से संयम बहुत आवश्यक है। हमारे यहां मनुष्य के निर्माण की दस विधाएं बताई गई हैं, उनमें से यह भी एक है। वे दस विधाएं हैं,

“धृतिः क्षमा दमोस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥”

धर्म कोई पूजा पद्धति नहीं है, व्यक्ति के निर्माण के लिए ये सब कारक हैं, आवश्यक तत्व हैं। यदि इन आवश्यक तत्वों को हम मनुष्य के अन्दर संजोने का काम करते हैं, तो इसके लिए यह बहुत जरूरी है कि मनुष्य का निर्माण किया जाए। मनुष्य के निर्माण के लिए, उसे इन सारी बातों के लिए प्रशिक्षित करने के लिए, उसको आगे बढ़ाने के लिए, उसके विकास के लिए इन सारी बातों की बहुत जरूरत होती है। इसलिए प्राथमिकता यह है कि चरित्र निर्माण करने की दृष्टि से यह मिलिट्री की ट्रेनिंग होनी बहुत जरूरी है, नहीं तो निश्चित रूप से डिसिप्लिन नहीं आएगा।

जब देश पर संकट की बात होती है। ...**(व्यवधान)**... जब देश का निर्माण करने की बात होती है, इसे वीर बनाने की होती है, तो नर का सबसे बड़ा धर्म है- मनुष्य को चेतना प्रदान करना, स्फूर्ति प्रदान करना। नर का सबसे बड़ा धर्म है- सदा प्रज्ज्वलित रहना, it should be charged:

“सबसे बड़ा धर्म है नर का, सदा प्रज्ज्वलित रहना।
दाहक शक्ति समेट, स्पर्श भी नहीं किसी का सहना॥”

जब हम राष्ट्र निर्माण के कार्यों में लगते हैं, तो फिर सोचने की जरूरत नहीं कि इसे करना है या नहीं करना है।

“बुझा बुद्धि का दीप वीरवर,
आंख मूंद चलते हैं।
उछल वेदिका पर चढ़ जाते,
और स्वयं जलते हैं, स्वयं बलते हैं।
शूर धर्म है हंसते-हंसते,
अंगारों पर चलना।
शूर धर्म है अग्नि शोणित पर,
धरकर पांव मचलना।
शूर धर्म है छाती खोल
तीर खाने को।
शूर धर्म है हंसते-हंसते
हलाहल पी. जाने को॥”

कहीं पर यज्ञ वेदिका बनाने की जरूरत नहीं है, अपने आपको तैयार करना होता है।

[डा. सत्यनारायण जटिया]

“आग हथेली पर सुलगाकर,
सिर का हविष्य चढ़ाना,
और शूर धर्म है जग को
अनुपम बलि का पाठ पढ़ाना”

सर. यह जो वीरता है, यह जो शौर्य है और यह जो पराक्रम है, इनकी इस देश के साथ पहचान बनी हुई है। यह जो राष्ट्र का वैभव है, उनका निर्माण करने के लिए मनुष्य निर्माण की विधा में जो एक आवश्यक कारक तत्व है, उसमें निश्चित रूप से डिसिप्लिन का, अनुशासन का महत्व है। अनुशासन दूसरों से पालन कराने की अपेक्षा अगर हम स्वयं इसका पालन करें तो सबसे उत्तम है।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. E.M. SUDARSANA NATCHIAPPAN): Mr. Jatiya, the time for the Private Members' Business is over. Please continue your speech on the next allotted day. The other Members, who have given their names, also can speak on that day.

Now, we will take up Admitted Special Mentions for today.

SPECIAL MENTIONS

Demand for making the survey of India sole provider of MAP services of the country and using N.I.C. e-mail accounts in public and private sector for cyber security

SHRI TARUN VIJAY (Uttarakhand): Sir, in February 2013, last year, Google launched Google Mapathon, a contest which invited people to mark locality or name of building, place etc. They collected data ignoring security vetting as required under the regulatory framework for such works in India. The size and extent of data collected is unconfirmed, but seeing their reach and previous years' popularity of a similar contest, a huge amount of data has supposedly been collected, including data which could be sensitive and which have implications on national security.

As Google had not been complying with requirements arising from the law of the land, a legal action has been initiated by the Survey of India, which registered a complaint against it. Based on this, the CBI, recently, filed an FIR. It is now important that until the investigation is in process, Google should refrain from publishing, either through print or online, any kind of map data which is not yet cleared or vetted by regulatory agencies.

In this context, I demand the Government of India to empower the Survey of India to become India's principal map service provider. Further to this, I would like to request